



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा  
Dedicated to Truth in Public Interest

# नव विहान

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय  
नवीन प्रशासनिक भवन, चौथी मंजिल  
दा.नौ.मार्ग, मध्य रेलवे  
छ.शि.म.ट., मुंबई 400 001

2024

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय  
मध्य रेल, छ. शि. म. ट., मुंबई

हिंदी वार्षिक पत्रिका

**नव विहान**

**षष्ठम अंक**

**वर्ष 2024**

प्रधान संरक्षक

श्रीमती सुप्रिया सिंह, प्रधान निदेशक

संरक्षक

श्री विशाल चवरे, निदेशक

संपादक

श्री उदयशंकर पुरुषोत्तम दुबे, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

पत्रिका समिति

श्री उदयशंकर पुरुषोत्तम दुबे, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

श्री मो. फैज़, लेखापरीक्षक

डिज़ाइनकर्ता

श्री के. पी. बैजु, वरिष्ठ लेखापरीक्षक /आई टी

अस्वीकरण: इस पत्रिका में रचनाकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचार उनके अपने हैं। संपादक मंडल का उनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। रचना/आलेखों के सम्पादन एवं प्रकाशन संबंधी सर्वाधिकार संपादक मंडल में निहित होंगे।




**नव विहान 2024**

# अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	रचनाकारों के नाम	पृष्ठ संख्या
1.	हिंदी दिवस 2024 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का सन्देश		5
2.	शुभकामना संदेश	श्रीमती सुप्रिया सिंह, प्रधान निदेशक	7
3.	संदेश	श्री विशाल चवरे, निदेशक	8
4.	संदेश	श्री उदयशंकर पुरुषोत्तम दुबे , वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी	9
5.	पंचायती राज: ग्रामीण सद्भाव-चेतना का महत्वपूर्ण स्तंभ	श्री नीतीश कुमार, लेखापरीक्षक	10
6.	इन्सान	श्री शीतलदास महावर, लेखापरीक्षक	13
7.	जीवन का स्वरूप सागर और गागर के परिप्रेक्ष्य	श्री अनिल कुंभारे, व.ले.प.अ.	14
8.	खेल का जीवन में महत्व	श्री संकेत गंगोलिया, लेखापरीक्षक	17
9.	वर्षा ऋतु	श्री दीपक, स.ले.प. अधिकारी	19
10.	प्रेम	श्री अंजीत कुमार, स.ले.प. अधिकारी	20
11.	भारतीय समाज पर सोशल मीडिया का प्रभाव	श्री विशाल वर्मन, स्टेनो	21
12.	दोस्ती	श्री निलेश अहिरे, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	24
13.	बिना मोबाईल वाली माँ चाहिए	श्री नारण डी चावडा, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	25
14.	किस्मत का खेल	श्री दिनेश नागराळे, स.ले.प. अधिकारी	26
15.	भारत में आय असमानता: गहराई से विश्लेषण	श्री गजराज नेगी, लेखापरीक्षक	27
16.	खेल का खेला हो गया	श्री प्रसाद भेलके, क्लर्क	30
17.	योग और स्वस्थ जीवन	श्री महेंद्र मालू, लेखापरीक्षक	31
18.	हिंदी भारत की राजभाषा	श्री मो. फैज़, लेखापरीक्षक	33
19.	कड़ी मेहनत बनाम स्मार्ट वर्क के बारे में एक कहानी	श्री एस.टी. मौन्देकर, स.ले.प. अधिकारी	34
20.	“सत्य कभी भी एक न्यायपूर्ण कार्य को हानि नहीं पहुँचाता”	सुश्री आरुषी यादव, लेखापरीक्षक	35
21.	पश्चिमी घाटों में मानसून : एक विस्तृत विश्लेषण	सुश्री नम्रता, स्टेनो	39
22.	मुंबई की लोकल ट्रेन	श्री मुकेश रजक, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	41



- 
- \* टिप्पणियां हिंदी में लिखिए ।
  - \* मसौदे हिंदी में तैयार कीजिए ।
  - \* शब्दों के लिए अटकिए नहीं ।
  - \* अशुद्धियों से घबराइए नहीं ।
  - \* अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए ।

**अमित शाह**  
**गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री**  
**भारत सरकार**



**प्रिय देशवासियो!**

**आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।**

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंखल, गुरु नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो

रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगांठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक घेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में अटल बिहारी वाजपेयी जी ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्घरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।


दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2024

  
(अमित शाह)



## शुभकामना संदेश

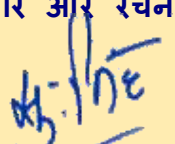
“भारत में हर भाषा का सम्मान है, पर हिन्दी ईश्वर का वरदान है”

कार्यालय की राजभाषा पत्रिका “नव विहान” के षष्ठम अंक का प्रकाशन करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है जो कि कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को नया रूप देगी।

इस अवसर पर हम सभी को यह समझना जरूरी है कि जैसे हिन्दी को लागू करने के लिए नियम तो बनाये जा सकते हैं लेकिन उसको अपनाने के लिए जब तक मन से नहीं सोचेंगे तब तक महात्मा गांधी जी के द्वारा देखा गया सपना सच नहीं हो सकता। हम दूसरे देशों की नकल तो बड़ी आसानी से करते हुए कहते हैं कि वो देश तो विकसित हो चुका है, लेकिन उसके विकास में वहाँ के जनमानस की भाषा के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। इसको भी नहीं भूला जा सकता कि अधिकांश देशों में दो भाषाओं का प्रयोग किया जाता है, पहली तो अन्तर्राष्ट्रीय भाषा जो की राजनीतियों और वैज्ञानिकों के प्रयोग के लिए है लेकिन अंतर्देशीय कार्यक्रमों के लिए राजभाषा का प्रयोग जरूरी है। जैसे किसी भी देश का विकास कोई एक व्यक्ति नहीं कर सकता, उसी प्रकार किसी भाषा का प्रचार व प्रसार कोई एक नहीं कर सकता वरन हम सभी को मिलकर अपनी तरफ से इसके लिए हरसंभव प्रयास करना चाहिए।

अपना देश विश्व की तीसरी आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है और आशा करते हैं कि वर्ष 2047 तक विकसित देश बन जाएगा। इसके विकास के साथ-साथ हमें हिन्दी को भी पूर्ण राजभाषा बनाने का प्रयास करना है। इसके लिए हम सभी को अपने अनुभागों व इकाइयों में हिन्दी को प्रोत्साहन देना है और विभाग द्वारा तय किये गए मानदंड के अनुरूप उतरना है।

“नव विहान” पत्रिका के षष्ठम अंक के प्रकाशन पर कार्यालय परिवार और रचनाकारों को मेरी तरफ से बहुत-बहुत बधाई और हार्दिक शुभकामनाएँ।

  
(सुप्रिया सिंह)  
प्रधान निदेशक





## संदेश

मैं कार्यालय की हिंदी पत्रिका "नव विहान" के षष्ठम अंक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। राजभाषा के प्रगामी प्रयोग की दिशा में इस पत्रिका का प्रकाशन निश्चित ही एक अत्यंत सराहनीय कदम है।

यह पत्रिका कार्यालय की रचनात्मक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का दर्पण है। यह न केवल कार्यालय में हिंदी के कार्यान्वयन को प्रतिबिंबित करती है, बल्कि कार्यालय के बुद्धिजीवियों को भी अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करती है।

यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार का एक छोटा सा माध्यम है। मैं रचनाकारों को उनके बहुमूल्य योगदान के लिए धन्यवाद देते हुए इसके उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की ढेर सारी शुभकामनाओं सहित।

(विशाल चवरे)  
निदेशक







## संपादकीय

हिंदी भाषा पूरे देश को एक करने में अहम् भूमिका निभाती है। भाषा, जाति-पाति, ऊँच-नीच, धर्म, समुदाय, क्षेत्र आदि की संवेदनाओं से दूर रहती है। भाषा को आप जितना अपनाएँगे वह आपको उतना ही अपनाएगी।

अपने कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका “नव विहान” के षष्ठम अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं अत्यंत ही हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ।

अपने कार्यालय द्वारा हिंदी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कई प्रयास किए गए हैं, जिसमें, प्रधान निदेशक महोदया द्वारा दिए गये “पांच बिन्दुओं” वाले निर्देश प्रमुख हैं, सम्पूर्ण विभाग और उसके अधीनस्थ अनुभाग इसको लागू कर चुके हैं। इसी कारण हमने प्रत्येक क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाया है। पूरा कार्यालय परिवार इसे इसी प्रकार संवर्धित करने का संकल्प लेते हैं ताकि भविष्य में शत प्रतिशत के लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

इसी के साथ “नव विहान” पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े संपादक मंडल, रचनाकारों एवं योगदान देने वाले अन्य सभी का मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अंक भी पूर्व अंकों की भाँति सभी को पसंद आएगा और भविष्य में भी आप सभी अपनी नूतन रचनाओं से इसे संवर्धित करते रहेंगे।

(उदयशंकर पुरुषोत्तम दुबे)  
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी



# पंचायती राज: ग्रामीण सद्भाव-चेतना का महत्वपूर्ण स्तंभ

श्री नीतीश कुमार  
लेखापरीक्षक

भारत में ग्रामीण विकास एवं स्थानीय स्वशासन के लिए प्रशासन की त्रिस्तरीय संरचना जिसमें जिलों, अंचलों और गांवों में स्थानीय स्वशासन एवं जमीनी स्तर पर लोकतंत्र को मजबूत करने की प्रणाली पंचायती राज व्यवस्था कहलाती है।

## इतिहास

स्वतंत्रता के पश्चात भारत में लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की भावना को साकार करने हेतु पंचायती राज व्यवस्था को अपनाया गया था परंतु यह न माना जाय कि पंचायती राज की परिकल्पना स्वतंत्र भारत की ही उपज है। भारत के प्राचीन इतिहास के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि वैदिक काल में भी पंचायतों का अस्तित्व था। ग्राम के प्रमुख को ग्रामिनी कहा जाता था। महाभारत, मनु स्मृति, कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी स्थानीय स्वशासन एवं ग्राम पंचायतों का उल्लेख मिलता है। जो बाद में भारत के गुलाम होने के पश्चात ब्रिटिश काल में कमजोर होते हुए समाप्त हो गया।

वर्तमान पंचायती राज व्यवस्था की परिकल्पना स्वतंत्रता संग्राम में ही गढ़ दी गई थी। स्वतंत्र भारत के संबंध में महात्मा गांधी ने कहा था “जब पंचायत राज स्थापित हो जाएगा, तब लोकमत ऐसे भी अनेक काम कर दिखाएगा जो हिंसा कभी नहीं कर सकती।”

## ♦ पंचायती राज व्यवस्था के उद्देश्य:

स्वतंत्र भारत में पंचायती राज संस्थाओं के बारे में संविधान के अनुच्छेद 40 के अंतर्गत प्रावधान बनाए गए लेकिन इसे धरातल पर उतारने के लिए अन्य प्रयासों की आवश्यकता थी इस लिए भारत सरकार ने समय-समय पर कई समितियों का गठन किया है। इन समितियों का उद्देश्य ग्रामीण स्तर पर स्वशासन के कार्यान्वयन की जांच करने और उसे पूर्ण करने अथवा बढ़ने के तरीके के बारे में सिफारिशें पेश करना था। आज के पंचायती राज व्यवस्था की नींव में भारत सरकार द्वारा बनाई गयी प्रमुख कई समितियां निम्नलिखित हैं जिनका विशेष योगदान रहा है।

- बलवंत राय मेहता समिति (1957)
- अशोक मेहता समिति (1977)
- जी.वी.के. राव समिति (1985)
- एल. एम. सिंघवी समिति (1986)

⇒ **बलवंत राय मेहता समिति (1957):** इस समिति ने त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था का सुझाव दिया था जो इस प्रकार थी।





1. ग्राम स्तर पर ग्राम पंचायत
2. प्रखण्ड स्तर पर पंचायत समिति
3. जिला स्तर पर जिला परिषद

लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की यह व्यवस्था महात्मा गांधी के जन्म दिन के अवसर पर 02 अक्टूबर 1959 ई को राजस्थान के नागौर जिले से प्रारंभ किया गया | कालांतर में पंचायतों के उद्धार हेतु कई अन्य समितियों की नियुक्ति की गई थी |

⇒ **अशोक मेहता समिति (1977):** भारत में स्थानीय स्वशासन अर्थात् पंचायती राज व्यवस्था को पुनर्जीवित और इसकी नींव मजबूत करने के प्रयास में वर्ष 1977 ई में इस समिति की नियुक्ति की गई थी।

इस समिति की प्रमुख सिफारिशें इस प्रकार हैं:

- \* त्रिस्तरीय प्रणाली के स्थान पर दो स्तरीय प्रणाली स्थापित की जानी चाहिए: जिला परिषद (जिला स्तर) और मंडल पंचायत (गांवों का एक समूह)।
- \* राज्य स्तर के बाद जिला स्तर को पर्यवेक्षण का पहला स्तर बनाया गया।
- \* जिला परिषद् कार्यकारी निकाय होनी चाहिए तथा जिला स्तर पर योजना बनाने के लिए जिम्मेदार होना चाहिए।
- \* संस्थाओं (जिला परिषद और मंडल पंचायत) को अपने स्वयं के वित्तीय संसाधन जुटाने के लिए अनिवार्य शक्तियां दी जाएंगी।

पंचायती राज व्यवस्था के सुदृढीकरण में मुख्यतः उपर्युक्त दो समितियों का ही योगदान रहा देश में ग्राम पंचायत तो थी परंतु इसकी प्रणाली में कई खामियां थी | ऐसे में यह संस्था अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल नहीं हो पा रही थी जिस कारण वर्ष 1992 ई. में 73वां एवं 74वां संविधान संशोधन अधिनियम लाया गया जिसे दोनों सदनों और राष्ट्रपति के मंजूरी के उपरांत संविधान में भाग-09 एवं 11वीं अनुसूची जोड़ी गयी और क्रमशः 24 अप्रैल 1993 ई एवं जून 1993 ई को प्रभाव में आया साथ ही इस अधिनियम ने देश में पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक संस्था का दर्जा दिया | यह अधिनियम देश में जमीनीस्तर पर लोकतांत्रिक संस्थाओं के निर्माण में एक बहुत ही महत्वपूर्ण कदम था | इस अधिनियम ने प्रतिनिधि लोकतंत्र को भागीदारी लोकतंत्र में बदल दिया है।

#### ♦ पंचायती राज संस्थाओं के महत्व:

(क) **लोकतांत्रिक भागीदारी:** ग्रामीण क्षेत्रों में लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को बढ़ावा देना और स्थानीय प्रतिनिधियों को चुनने का अधिकार प्रदान करना।



- (ख) **स्थानीय स्वशासन:** लोगों को स्थानीय स्तर पर स्वशासन का अधिकार देना, जिससे वे अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं कर सकें।
- (ग) **विकासात्मक कार्य:** शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़कों, जल आपूर्ति, और अन्य बुनियादी सेवाओं के विकास के लिए योजनाएं बनाना और उनका कार्यान्वयन सुनिश्चित करना।
- (घ) **सामाजिक न्याय:** गरीब और पिछड़े वर्गों को समाज की मुख्यधारा में लाना और उनके अधिकारों की रक्षा करना।

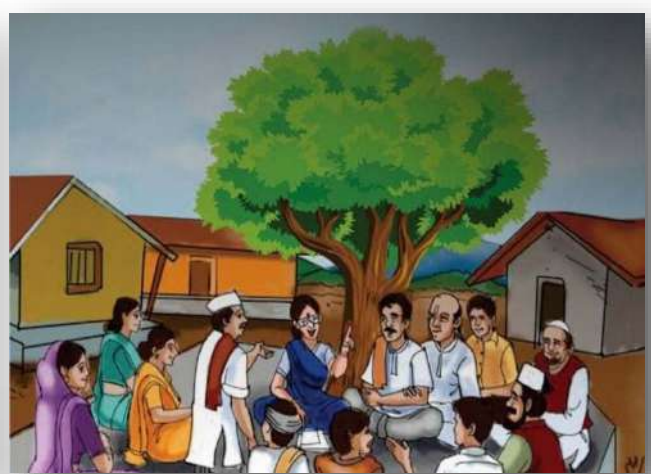
♦ **चुनौतियाँ और सुधार**

1. **राजनीतिक दबाव:** स्थानीय राजनीति और जातिगत भेदभाव पंचायतों के कामकाज को प्रभावित कर सकते हैं।
2. **प्रशासनिक दक्षता:** पंचायतों के सदस्य अक्सर प्रशासनिक और प्रबंधन संबंधी प्रशिक्षण की कमी से जूझते हैं।
3. **वित्तीय संसाधनों की कमी:** पंचायतों के पास सीमित वित्तीय संसाधन होते हैं, जिससे विकास योजनाओं को लागू करने में कठिनाई होती है।

इन चुनौतियों के बावजूद, पंचायती राज व्यवस्था ने ग्रामीण विकास और लोक भागीदारी को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सुधार और निगरानी के प्रयास इसे और भी प्रभावशाली और कार्यकुशल बना सकते हैं।

**निष्कर्ष**

पंचायती राज व्यवस्था भारत के ग्रामीण विकास का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। इसके माध्यम से स्थानीय प्रशासन को सशक्त किया जाता है, और लोगों को उनके क्षेत्रीय मुद्दों पर निर्णय लेने का अधिकार प्राप्त होता है। यह व्यवस्था ग्रामीण क्षेत्रों में समृद्धि और आत्म-निर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।





# इन्सान

श्री शीतलदास महावर

लेखापरीक्षक



पाषाण सा हृदय रख वो  
खुद को इन्सान समझता है,  
बनाकर कुछ चंद कलपुर्जे  
खुद को भगवान् समझता है।  
हवा के झोके सा है जीवन  
राहे सफ़र को गुमान समझता है,  
राख के ढेर में दबी रह जाती है हस्ती  
फिर भी खुद को बलवान समझता है।  
इंसान खुद को इंसान बना ले  
इतना ही काफी है,  
जीत जाए गर खुद को  
फिर जीतने को क्या बाकी है।  
पूरी कायनात के एक जर्रे माफिक भी नहीं  
और खुद को महान समझता है,  
इंसान भगवान को समझता नहीं  
खुद को ही भगवान समझता है ॥





# जीवन का स्वरूप सागर और गागर के परिप्रेक्ष्य

श्री अनिल कुंभारे

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

“जीवन रूपी गागर में सारी उलझनों, परेशानियों, चिंता को भरकर,  
जीवन रूपी सागर में मदमस्त बह जाना ही असली खुशहाल जीवन है।”

आम जीवन में हम समस्त प्राणी जीवन के विविध पहलुओं, उसकी जटिलता को समझने के लिए अक्सर सागर और गागर की उपमा का प्रयोग है। ये दोनों चित्रण जीवन की विशालता और उसकी सीमितताओं को उजागर करते हैं। सागर का विशाल विस्तार और गहराई जीवन की अनंत संभावनाओं, विविधताओं और गहराइयों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि गागर की संकीर्णता और सीमित क्षमता जीवन की संक्षिप्तता, एक निश्चित आयाम में वस्तु को सहेजना, सीमाओं और संतुलन का प्रतीक हैं। आइये इस लेख के माध्यम से हम इन दोनों दृष्टिकोणों का गहराई से विश्लेषण करेंगे और जीवन को सागर और गागर के परिप्रेक्ष्य से समझेंगे साथ ही साथ यह जानेंगे कि कैसे ये जीवन की जटिलताओं को समझने में सहायक हो सकते हैं।

**जीवन सागर:**



1. **विशाल और अनंत संभावनाएँ:** सागर जितना विशाल है उसकी विशालता जीवन की अनंत संभावनाओं और अवसरों को दर्शाती है। सागर के असीम विस्तार की तरह, जीवन में भी अनगिनत अवसर और अनुभव होते हैं। सागर की गहराइयों में अज्ञात रहस्यों और जीवों की तरह, जीवन में भी कई अप्रत्याशित घटनाएँ और अवसर होते हैं जो हमें नई दिशा और समझ प्रदान करते हैं। सागर की तरह, जीवन भी कभी स्थिर नहीं रहता, बल्कि निरंतर चलता रहता है।
- \* **अवसर और चुनौतियाँ:** जैसे सागर में नई लहरें और धाराएँ उत्पन्न होती रहती हैं, वैसे ही जीवन में भी नए अवसर और चुनौतियाँ लगातार आती रहती हैं। इन अवसरों और चुनौतियों का सामना करने से हमें नए कौशल और अनुभव प्राप्त होते हैं।





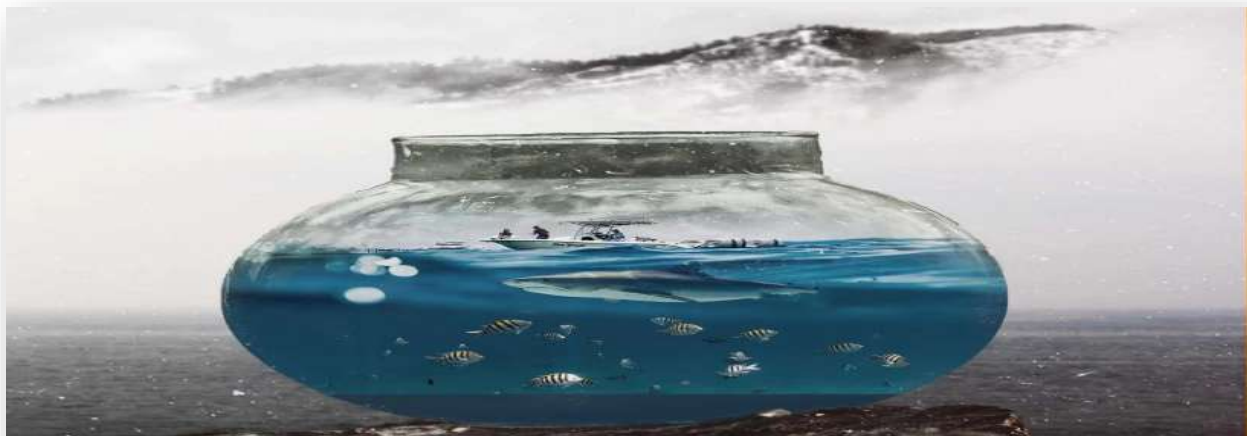
2. **विविधता और समृद्धि:** सागर में अनेक प्रकार की वनस्पतियाँ, जीव-जंतु, और परिस्थितिक तंत्र होते हैं जो उसकी विविधता को दर्शाते हैं। इसी प्रकार, जीवन भी विविधताओं से भरा हुआ है। हर व्यक्ति की सोच, अनुभव और यात्रा अद्वितीय होती है, जो जीवन को समृद्ध और विविध बनाती है।

\* **अलग-अलग अनुभव:** सागर की विविधता की तरह, जीवन में भी विभिन्न प्रकार के अनुभव होते हैं। ये अनुभव हमारी सोच, भावना और दृष्टिकोण को विस्तृत करते हैं, और हमें जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने में मदद करते हैं।

3. **अस्थिरता और परिवर्तनशीलता:** सागर की लहरें निरंतर बदलती रहती हैं, जो उसके अस्थिर स्वभाव को दर्शाती हैं। जीवन में भी सुख, दुःख, सफलता, और विफलता के लहरें निरंतर चलती रहती हैं। यह अस्थिरता जीवन की गतिशीलता और परिवर्तनशीलता को दर्शाती है।

\* **समायोजन और अनुकूलन:** सागर की लहरों की तरह, जीवन की घटनाओं और परिस्थितियों में लगातार परिवर्तन होता है। हमें इन परिवर्तनों के साथ समायोजित होना पड़ता है और अपने आप को नए परिस्थितियों के अनुसार अनुकूलित करना पड़ता है।

**जीवन गागर:**



1. **सीमितता और संक्षिप्तता:** गागर की सीमित क्षमता और संकुचित आकार जीवन की संक्षिप्तता और सीमाओं को प्रकट करते हैं। जीवन में कई बार हमें सीमित संसाधनों और समय के भीतर ही काम करना पड़ता है। जैसे गागर एक निश्चित मात्रा में ही सामग्री को संजो सकती है, वैसे ही जीवन में भी हमें अपनी सीमाओं के भीतर रहकर काम करना पड़ता है।

\* **संसाधनों का प्रबंधन:** गागर की सीमित क्षमता की तरह, जीवन में भी सीमित संसाधनों का कुशल प्रबंधन आवश्यक होता है। हमें अपने संसाधनों और समय का सोच-समझकर उपयोग करना पड़ता है ताकि हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें।

2. **संग्रहण और संतुलन:** गागर में सामग्री को संजोने और प्रबंधित करने की आवश्यकता होती है। इसी तरह, जीवन में भी हमें अपने अनुभवों, भावनाओं और संसाधनों का संतुलित प्रबंधन करना पड़ता है। यह हमें जीवन के विभिन्न पहलुओं को सही ढंग से समझने और संतुलित रहने में मदद करता है।

\* **व्यक्तिगत विकास:** गागर की तरह सीमित संसाधनों में भी हमें अपनी क्षमताओं का सर्वोत्तम उपयोग करना होता है। यह हमें आत्मविकास और व्यक्तिगत उन्नति की दिशा में मार्गदर्शन करता है।

3. **संवेदनशीलता और प्रभाव:** गागर का आकार छोटा होने के कारण उसमें होने वाले किसी भी बदलाव को तुरंत महसूस किया जा सकता है। जीवन की छोटी-छोटी घटनाएँ भी हमारे मनोबल और भावनाओं पर गहरा प्रभाव डाल सकती हैं। यह संवेदनशीलता हमें तत्काल प्रतिक्रिया और समायोजन की आवश्यकता का अहसास कराती है।

**तत्काल प्रतिक्रिया:** गागर में बदलाव को तुरंत महसूस किया जा सकता है, जैसे जीवन में छोटी घटनाओं का प्रभाव तुरंत हमारी भावनाओं और मानसिक स्थिति पर पड़ता है। यह हमें अपने अनुभवों पर ध्यान देने और त्वरित प्रतिक्रिया देने की आवश्यकता को समझाता है।

### निष्कर्ष:

जीवन को सागर और गागर के दृष्टिकोण से समझना हमें इसके विभिन्न पहलुओं को गहराई से समझने में मदद करता है। सागर की तरह विशालता और गहराई जीवन के अनंत संभावनाओं और विविधताओं को दर्शाती है, जबकि गागर की तरह सीमितता और संक्षिप्तता जीवन की सीमाओं और संतुलन को प्रकट करती है।

सागर के दृष्टिकोण से जीवन की विशालता और विविधता को अपनाते हुए, गागर के दृष्टिकोण से सीमित संसाधनों और संवेदनशीलता को समझना हमें एक संतुलित और समृद्ध जीवन जीने में सहायक होता है। दोनों दृष्टिकोण मिलकर हमें जीवन की चुनौतियों का सामना करने, अवसरों का लाभ उठाने और संतुलित दृष्टिकोण अपनाने में सक्षम बनाते हैं।





# खेल का जीवन में महत्व

श्री संकेत गंगोलिया  
लेखापरीक्षक



मानव संसार का सबसे महत्वपूर्ण प्राणी है। अन्य प्राणियों की अपेक्षा मानव में सोचने-समझने, चिंतन करने की शक्ति अधिक है, परंतु मस्तिष्क का एकांगी विकास किसी काम का नहीं है। मस्तिष्क के विकास के साथ-साथ शारीरिक शक्ति का होना भी आवश्यक है।

‘शरोरामायं खलु धर्मसाधनम्’ अर्थात् शरीर कर्तव्य पालन का पहला साधन है। कालिदास का यह कथन पूर्णतः सत्य है। जीवन की पहली आवश्यकता स्वस्थ शरीर ही है। अच्छे स्वास्थ्य के अनेक साधन हैं जैसे-व्यायाम, खेलकूद, जिम्नास्टिक आदि। व्यायाम तथा जिम्नास्टिक से शरीर स्वस्थ तो अवश्य रहता है, परंतु न तो इनसे मनोरंजन होता है और न ही शरीर के स्वस्थ बनने के अतिरिक्त इसका कोई अन्य लाभ है। साथ ही ये दोनों साधन नीरस हैं। इसके विपरीत खेलों से व्यायाम के साथ-साथ मनोरंजन भी होता है। यही कारण है कि विद्यार्थियों की रुचि व्यायाम की अपेक्षा खेलकूद में अधिक होती है। वे खेलकूद में भाग लेकर अपना स्वास्थ्य ठीक रखते हैं स्वामी दयानंद सरस्वती ने कहा था-

“मजबूत आत्मा और पक्के मन का मंदिर शरीर कल्पना में भी कैसे कच्चा हो सकता है?” खेलकूद स्वास्थ्य-रक्षा का निःशुल्क साधन है। स्वामी विवेकानंद जी ने स्वास्थ्य का मस्तिष्क पर प्रभाव के विषय में अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त किए थे “स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। “

खेलों से स्वास्थ्य तो ठीक रहता ही है इनसे मनुष्य का चारित्रिक और आध्यात्मिक विकास भी होता है। खेलकूद से पुष्ट और स्फूर्तिमय शरीर ही मन को स्वस्थ बनाता है। खेलकूद मानव मन को प्रसन्न और उत्साहित बनाए रखते हैं। खेलों से नियम पालन के स्वभाव का विकास होता है और मन एकाग्र होता है। खेल में भाग लेने से खिलाड़ियों में सहिष्णुता, धैर्य और साहस का विकास होता है तथा सामूहिक सद्भाव और भाईचारे की भावना बढ़ती है। खेलकूद अप्रत्यक्ष रूप से आध्यात्मिक विकास में भी सहायक होते हैं ये जीवन संघर्ष का मुकाबला करने की शक्ति प्रदान करते हैं। खेलकूद से एकाग्रता का गुण आता है जिससे अध्यात्म साधना में मदद मिलती है।

सच्चा खिलाड़ी, हानि-लाभ, यश-अपयश, सफलता-असफलता को समान भाव से ग्रहण करने का अभ्यस्त हो जाता है। खेलों में भाग लेने से तन मन की शक्ति के साथ-साथ हमारा आत्मविश्वास भी बढ़ता है। तन-मन से स्वस्थ आत्मविश्वासी व्यक्ति के लिए जीवन में कोई भी काम करना कठिन नहीं होता।

मनुष्य अकेले किसी भी खेल को नहीं खेल सकता। दो या दो से अधिक व्यक्ति ही किसी खेल को खेल सकते हैं। मिलकर खेलने से हमारा दूसरे खिलाड़ियों में परिचय बढ़ता है। हमें मिलकर काम करने की आदत पड़ती है। मिलकर खेलने में व्यक्तिगत हार-जीत नहीं रहती। हार का दुःख तथा जीत की खुशी साथी खिलाड़ियों में बंट जाती है। खेल में जीत के लिए आवश्यक है कि खिलाड़ी व्यक्तिगत यश के लिए न खेले। वह अन्य खिलाड़ियों के साथ सहयोग से खेले। इस प्रकार खेलों से टीम भावना तथा सहकारिता की भावना से काम करने की शिक्षा स्वयं से मिलती रहती है।

अच्छे खिलाड़ियों को खेलने के लिए अपने स्कूल के अतिरिक्त दूसरे स्कूलों में, अपने नगर के अतिरिक्त दूसरे नगरों में, अपने प्रदेश के अतिरिक्त दूसरे प्रदेशों में यहाँ तक कि अपने देश के अतिरिक्त दूसरे देशों में भी जाना पड़ता है। इससे उसके ज्ञान का विस्तार होता है। हमें दूसरे देशों की सभ्यता-संस्कृति, भाषा, खान-पान, रहन-सहन आदि को देखने-समझने का अवसर प्राप्त होता है। अधिकतर खेल घर से बाहर निकलकर प्रकृति के खुले आँगन में खेले जाते हैं। इससे खुली हवा का आनंद भी मिलता है।

खेलों में बच्चे, बूढ़े, युवक सभी आयु वाले भाग ले सकते हैं। खेल दो प्रकार के हैं- एक वे जो घर में बैठकर खेले जा सकते हैं या किसी हॉल में जैसे-शतरंज, लूडो, केरमबोर्ड, टेबल टेनिस आदि। दूसरे प्रकार के खेल वे हैं जो घर से बाहर खुले स्थानों और मैदानों में खेले जाते हैं जैसे-हॉकी, क्रिकेट, व वोलिबॉल, फुटबॉल, लोन टेनिस, कबड्डी आदि। घर में खेले जाने वाले खेलों से केवल मनोरंजन होता है। इन से मन मस्तिष्क का व्यायाम तो हो जाता है, परंतु शरीर का व्यायाम नहीं होता। शारीरिक व्यायाम तो मैदान में खेले जाने वाले खेलों से ही होता है।

आज संसार के सभी देशों ने खेल के महत्व को समझ लिया है, इसलिए खेलों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। स्कूलों, कॉलेजों में खेलों पर अधिक खर्च किया जाने लगा है। अब हर स्तर पर खेलों का महत्व समझाने के लिए खेलों का आयोजन होने लगा है। इससे न केवल खिलाड़ियों बल्कि देखने वालों और सुनने वालों का भी मनोरंजन होता है। इससे जीवन रसमय बन जाता है। खेल के मैदान में खिलाड़ियों से अधिक उत्साह दर्शकों में दिखाई देता है। विदेशों में खेल के महत्व को समझते हुए खेल पर बहुत ध्यान दिया जाता है। बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हमारे देश में सरकार खेलों पर उतना ध्यान नहीं देती जितना देना चाहिए। इस प्रकार हम देखते हैं कि खेलों में भाग लेकर खिलाड़ी अपना स्वास्थ्य तो ठीक रखते ही हैं साथ ही अपने विद्यालय, कार्यालय तथा देश का नाम भी उज्ज्वल करते हैं।

हिन्दुस्तान की है शान हिन्दी, हर हिन्दुस्तानी  
की है पहचान हिन्दी, एकता की अनूपम परम्परा  
है हिन्दी, हर दिल का अरमान है हिन्दी।  
हिन्दी दिवस पर आप सभी को शुभकामनाएं।





# वर्षा ऋतु

श्री दीपक

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



वर्षा ऋतु जब भी आती,  
अपने संग खुशियाँ ले आती ।  
सबके मन को हर्षाती,  
इसीलिए तो ऋतुओं की रानी कहलाती ।

उमड़-धुमड़ मेघ छा जाते,  
छा जाती घटा काली-काली ।  
मोर भी नाचे झूम-झूमकर,  
हवा भी चले मंद-मंद,  
मन को आता बड़ा आनंद,  
ऋतु यह सबको बड़ी सुहाती  
वर्षा ऋतु जब भी आती,  
अपने संग खुशियाँ ले आती ।  
सबके मन को हर्षाती,  
इसीलिए तो ऋतुओं की रानी कहलाती ।

बौछारें जब इसकी धरती पर पड़ती,  
मानो इसमें नवजीवन है भरती ।  
छा जाती चहुँ ओर हरियाली,  
बिखर जाती छटा निराली ।  
मिट्टी की सौँधी-सी खुशबू,  
सबके मन को बड़ा है भाती ।  
वर्षा ऋतु जब भी आती,  
अपने संग खुशियाँ ले आती ।  
सबके मन को हर्षाती,  
इसीलिए तो ऋतुओं की रानी कहलाती ।



# प्रेम

श्री अंजीत कुमार

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रेम क्या है, समर्पण है, त्याग है।  
एक अनुभूति जो पर्याय बन जाती है,  
सम्पूर्ण जीवन का।  
एक आभास है जो सहज नहीं इतना  
पर कह जाती है कानों में "पाती प्रेमभरी" ।  
प्रेम दुर्लभ है, इतना काश!  
मिल जाता बाजारों में  
कहाँ मिलता यह पैसों की ढेर से  
यह तो है एक भावना जो है उर मे किसी के,  
निश्छल, निष्पाप होता है प्रेम  
मिलता नहीं सड़को पर यूँ ही  
जजबातों के साये मे पलती है,  
प्रेम रूपी कल्पनाएँ  
जीवन के आँगन को बना जाती है उर्वर  
प्रेमरूपी 'तरु' घर के दीवारों को बना देती है,  
कुछ जीवंत यूँ ही, दीवारें भी बोलती है जहाँ  
खिड़कियाँ, दरवाजे जिनके मुस्कुराते हैं,  
है ईश्वर से यही दुआ हर आँगन में  
बरसे प्रेमरूपी सुधा, महके प्रेमरूपी सुवास  
जीवन है, दो पल का मेला  
क्या तेरा, क्या मेरा  
बस हो यही प्रेम की परिभाषा  
प्रेम क्या है, समर्पण है, त्याग है  
एक अनुभूति, जो पर्याय बन जाती है,  
सम्पूर्ण जीवन का ।





# भारतीय समाज पर सोशल मीडिया का प्रभाव

श्री विशाल वर्मन  
स्टेनो



सोशल मीडिया ने भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं पर गहरा असर डाला है। फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, और व्हाट्सएप जैसे प्लेटफॉर्मों ने न केवल व्यक्तिगत जीवन को बदल दिया है, बल्कि समाज की राजनीति, संस्कृति, और सामाजिक संबंधों को भी पुनः परिभाषित किया है। इस लेख में हम देखेंगे कि कैसे सोशल मीडिया ने सामाजिक संबंधों, राजनीति, संस्कृति, और सामाजिक न्याय को प्रभावित किया है और इसके संभावित लाभ और नुकसान क्या हैं।

## 1. सामाजिक संबंधों पर प्रभाव

सोशल मीडिया ने व्यक्तिगत और सामाजिक संबंधों को नए तरीके से जोड़ा है। पहले जहां लोग लंबे समय तक संपर्क में रहने के लिए पत्र और फोन कॉल्स पर निर्भर रहते थे, वहीं अब सोशल मीडिया ने यह प्रक्रिया बेहद त्वरित और सहज बना दी है। अब हम मिनटों में अपने दोस्तों, परिवार के सदस्यों और सहकर्मियों से संपर्क कर सकते हैं, चाहे वे कहीं भी हों।

इसका एक सकारात्मक पहलू यह है कि लोग पुराने मित्रों और रिश्तेदारों से संपर्क बनाए रख सकते हैं, जो कि पहले मुश्किल था। विशेषकर, प्रवासी भारतीयों के लिए, अपने देश के साथ जुड़े रहना अब और भी आसान हो गया है। सोशल मीडिया ने भी शादी और डेटिंग की दुनिया को बदल दिया है। कई लोग अब ऑनलाइन डेटिंग ऐप्स का उपयोग कर अपनी जीवन साथी की खोज कर रहे हैं, जो कि पूर्व में अप्रचलित था।

हालांकि, इसके साथ ही सोशल मीडिया पर आभासी संबंध वास्तविकता से भिन्न हो सकते हैं। आभासी जीवन की चमक और वास्तविक जीवन के बीच का अंतर कभी-कभी मानसिक स्वास्थ्य पर असर डाल सकता है। लोग अक्सर सोशल मीडिया पर अपनी आदर्श छवि प्रस्तुत करते हैं, जिससे वास्तविकता का सामना करने में कठिनाइयाँ हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया पर अविश्वसनीय और नकारात्मक टिप्पणियाँ भी मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डाल सकती हैं।

## 2. राजनीति पर प्रभाव

सोशल मीडिया ने भारतीय राजनीति में एक नया युग शुरू किया है। चुनाव प्रचार, जनसंपर्क, और राजनीतिक बहसों अब सोशल मीडिया के माध्यम से तीव्र गति से होती हैं। राजनीतिक दल और नेता अब सीधे जनता से संवाद कर सकते हैं, जो पहले मीडिया और अन्य पारंपरिक माध्यमों के माध्यम से होता था।

यह प्लेटफॉर्म चुनावी प्रक्रिया में पारदर्शिता और जनसंचार के नए अवसर प्रदान करते हैं। उम्मीदवारों और दलों द्वारा अपनी नीतियों और योजनाओं को सीधे लोगों के बीच प्रचारित करना अब आसान हो गया है। इसके साथ ही, सोशल मीडिया पर राजनीतिक विमर्श और बहस भी आम हो गई है, जो लोकतंत्र के लिए सकारात्मक पहलू हो सकता है।

हालांकि, सोशल मीडिया पर फर्जी खबरें और झूठी सूचनाएं भी तेजी से फैलती हैं, जिससे मतदाताओं की राय प्रभावित हो सकती है। चुनावी प्रचार में नकारात्मक प्रचार की रणनीतियाँ भी अधिक प्रभावशाली हो गई हैं। इसके अलावा, सोशल मीडिया पर उग्रवाद और कट्टरपंथी विचारधाराओं का प्रचार भी चिंता का विषय है।

### 3. संस्कृति पर प्रभाव

सोशल मीडिया ने भारतीय संस्कृति को वैश्विक स्तर पर प्रदर्शित करने का नया मंच प्रदान किया है। विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियाँ, त्योहार, और परंपराएँ अब सोशल मीडिया पर साझा की जा सकती हैं, जिससे उनकी पहुंच और लोकप्रियता बढ़ी है। भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को विश्वभर में पहचान मिल रही है।

सोशल मीडिया पर विभिन्न सांस्कृतिक और पारंपरिक गतिविधियों का प्रचार करके, लोग वैश्विक दर्शकों को भारतीय संस्कृति से परिचित करा रहे हैं। यह भारतीय कला, संगीत, और त्योहारों को वैश्विक मंच प्रदान करता है, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलता है।

साथ ही, सोशल मीडिया ने नई सांस्कृतिक प्रवृत्तियों को जन्म दिया है। युवा पीढ़ी की प्राथमिकताएँ और जीवनशैली में बदलाव आ रहा है, जो सोशल मीडिया के प्रभाव का परिणाम है। पारंपरिक मान्यताओं और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो गया है। सोशल मीडिया की संस्कृति ने भारतीय समाज में परिवर्तन की गति को तेज किया है, जिससे कुछ परंपरागत मूल्यों की पुनरावृत्ति हो रही है।

### 4. सामाजिक न्याय और आंदोलन

सोशल मीडिया ने सामाजिक न्याय के मुद्दों को प्रमुखता देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विभिन्न सामाजिक आंदोलनों जैसे कि #MeToo, #BlackLivesMatter, और #SaveOurSoil ने सोशल मीडिया के माध्यम से अधिक जनसमर्थन प्राप्त किया है। भारत में भी, सामाजिक असमानताओं और अन्याय के खिलाफ जागरूकता फैलाने में सोशल मीडिया ने एक प्रमुख भूमिका निभाई है।

यह प्लेटफॉर्म सशक्तिकरण के एक उपकरण के रूप में कार्य करते हैं, जो लोगों को अपनी आवाज उठाने और समाज में बदलाव लाने का अवसर प्रदान करते हैं। सामाजिक मुद्दों पर चर्चा और जनमत तैयार करने में सोशल मीडिया ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

हालांकि, इन आंदोलनों के प्रभाव और परिणाम कभी-कभी भिन्न हो सकते हैं, और उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शित करने की आवश्यकता होती है। सोशल मीडिया पर कभी-कभी एकतरफा जानकारी और आक्षेपात्मक टिप्पणियाँ भी उत्पन्न होती हैं, जो आंदोलन के उद्देश्यों को धूमिल कर सकती हैं।

### 5. शिक्षा और ज्ञान प्रसार

सोशल मीडिया ने शिक्षा और ज्ञान के प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विभिन्न शैक्षिक संस्थान और शिक्षक अब अपने ज्ञान और संसाधनों को सोशल मीडिया के माध्यम से साझा कर सकते हैं। ऑनलाइन पाठ्यक्रम, ट्यूटोरियल्स, और वर्कशॉप्स अब अधिक सुलभ हो गए हैं, जिससे शिक्षा का स्तर और गुणवत्ता बढ़ी है।

यह प्लेटफॉर्म विशेष रूप से दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले छात्रों के लिए एक मूल्यवान संसाधन साबित हुए हैं, जहां पारंपरिक शिक्षा सुविधाएं सीमित हो सकती हैं।





## निष्कर्ष

सोशल मीडिया ने भारतीय समाज में कई प्रकार के प्रभाव डाले हैं। यह न केवल व्यक्तिगत और सामाजिक संबंधों को बदल रहा है, बल्कि राजनीति, संस्कृति, और सामाजिक न्याय के मुद्दों को भी पुनः परिभाषित कर रहा है। इस तकनीकी युग में, समाज को सोशल मीडिया के फायदों और खतरों दोनों के प्रति सजग रहना होगा। इसके सकारात्मक उपयोग से हम समाज में बदलाव और विकास को प्रोत्साहित कर सकते हैं, और इसके नकारात्मक प्रभावों से बचने के लिए सावधानी बरतनी होगी। सोशल मीडिया का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों को जोड़ना और एक सकारात्मक परिवर्तन लाना होना चाहिए, जिससे एक समृद्ध और जागरूक समाज का निर्माण किया जा सके।





# दोस्ती

श्री निलेश अहिरे

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मन से मन का मेल मिले  
बस वही दोस्त बन जाता है ....  
जात पात का जिसमे कोई न बंधन  
बस वही दोस्त कहलाता है ...

बिन बोले बिना बताये आंसू के  
हर कारण जो समझे है ...  
जीवन के हर मुश्किल में चट्टान सा खड़ा  
बस वही दोस्त कहलाता है ...

खुशियों में जो, भले ही शामिल ना  
गम में हमेशा तुम्हारे साथ रहे...  
हृदय के भीतर सदा स्थान रहे  
बस वही दोस्त कहलाता है...

जीवन की हर मुश्किल डगर आसान बना दे,  
चेहरे पे मुस्कान लाता रहे..  
गले लगा के जिसे सुकून मिले  
बस वही दोस्त कहलाता है ....





# बिना मोबाईल वाली माँ चाहिए

श्री नारण डी चावडा  
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



## विचार करने वाली घटना.....

पाँचवी कक्षा के छात्रों से बात करने के बाद शिक्षक ने उन्हें एक निबंध लिखने को दिया की वे “कैसी माँ” पसंद करते हैं?

सभी ने अपनी माँ की प्रशंसा करते हुए विवरण लिखा। उसमें एक छात्र ने निबंध पाठ का शीर्षक लिखा - “ऑफलाइन माँ”।

मुझे माँ चाहिए पर मुझे ऑफलाइन चाहिए। मुझे एक अनपढ़ माँ चाहिए, जो मोबाईल का इस्तेमाल करना नहीं जानती हो, लेकिन मेरे साथ हर जगह जाने को तैयार और आतुर हो।

मैं नहीं चाहता की माँ जीन्स और टी-शर्ट पहने बल्कि छोटू की माँ की तरह साड़ी पहने। मुझे एक ऐसी माँ चाहिए जो गोद में सिर रखकर मुझे सुला सके। मुझे माँ चाहिए लेकिन ऑफलाइन। उसके पास मेरे और मेरे पिताजी के लिए मोबाईल की तुलना में अधिक समय होगा।

ऑफलाइन माँ हो तो पिताजी से झगड़ा नहीं होगा। जब मैं शाम को सोने जाऊंगा तो विडिओ गेम खेलने के बजाए वो मुझे एक कहानी सुनाकर सुलाएगी।

माँ आप ऑनलाइन पिज्जा ऑर्डर मत कीजिए। घर पर कुछ भी बनाइए पापा और मैं मजे से खाएंगे। मुझे बस ऑफलाइन माँ चाहिए।

इतना पढ़ने के बाद पूरी क्लास के मॉनिटर के रौने की आवाज सुनाई दी । हर एक छात्र और क्लास टीचर की आँखों में आँसू बह रहे थे।

माँ मॉडर्न रहो लेकिन अपने बच्चे के बचपन का खयाल रखो। मोबाईल की वजह से बच्चों को दूर मत करो। यह बचपन कभी वापस नहीं आएगा।

अपने ही बच्चों का बचपन छीनने वाली कथित मॉडर्न माओं को समर्पित यह रचना है।



# किस्मत का खेल

श्री दिनेश नागराळे  
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हे प्रभु,  
ऐसा हमारे साथ अक्सर क्यों होता है?  
जिस बला को हम टालना चाहते हैं,  
उसी से पाला पड़ जाता है  
हम सिर्फ देखते रह जाते हैं,  
और वह हमें लूटकर चला जाता है

हे प्रभु,  
ऐसा हमारे साथ अक्सर क्यों होता है?  
प्रसादी के कतार में हम खड़े होते हैं,  
और नंबर आते ही प्रसाद खतम हो जाता है

हे प्रभु,  
ऐसा हमारे साथ अक्सर क्यों होता है?  
कपड़े सुखाने रखते ही,  
बादल छा जाते हैं,  
और जोर से बरसात से कपड़े भीग जाते हैं

हे प्रभु ,  
ऐसा हमारे साथ अक्सर क्यों होता है?  
सिनेमा का अच्छा सीन चलने के समय ही,  
बिजली चली जाती है

हे प्रभु,  
ऐसा हमारे साथ अक्सर क्यों होता है?  
सर मुंडाते हैं,  
और ओले पड़ने शुरू हो जाते हैं

ऐसे अनगिनत मौकों पर,  
हमने खुद को बेबस पाया  
दिख, समझ सब कुछ रहा था,  
पर कुछ न कर पाया

शायद इसे ही कहते हैं किस्मत का खेल,  
जिसके आगे प्रभु भी हो जाते हैं फेल





# भारत में आय असमानता: गहराई से विश्लेषण

श्री गजराज नेगी

लेखापरीक्षक



आय असमानता भारत में एक बहुपरकारी समस्या है, जो देश की सामाजिक और आर्थिक संरचना को प्रभावित करती है। इस समस्या की जड़ों को समझना और इसके समाधान के लिए उचित उपाय करना अत्यंत आवश्यक है।

## आय असमानता के मुख्य कारण

### 1. शिक्षा और कौशल में अंतर:

○ **शैक्षिक असमानता:** भारत में शिक्षा की गुणवत्ता और उपलब्धता में बड़ा अंतर है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों, या उच्च और निम्न जातियों के बीच शिक्षा में भिन्नता है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को बेहतर अवसर मिलते हैं, जब कि निम्न शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले व्यक्तियों के लिए अवसर सीमित होते हैं।

○ **कौशल विकास की कमी:** व्यावसायिक कौशल और प्रशिक्षण की कमी भी एक बड़ा कारण है। जिन व्यक्तियों को तकनीकी या पेशेवर कौशल प्राप्त होता है, वे उच्च वेतन वाले नौकरियों में काम कर सकते हैं।

### ○ असंगठित क्षेत्र और अस्थिर रोजगार:

○ **असंगठित क्षेत्र:** भारत में एक बड़ा हिस्सा असंगठित क्षेत्र में कार्यरत है, जिसमें स्थिरता और सामाजिक सुरक्षा की कमी होती है। इन क्षेत्रों में काम करने वाले लोगों को न्यूनतम वेतन, स्वास्थ्य सुविधाएं और अन्य लाभ नहीं मिलते।

○ **अस्थिर रोजगार:** अस्थिर और असुरक्षित रोजगार की स्थिति में रहने वाले लोग, जो अक्सर दिन-प्रतिदिन के काम करते हैं, उच्च आय प्राप्त करने में असमर्थ होते हैं।

### ○ आर्थिक अवसरों का असमान वितरण:

○ **शहरी और ग्रामीण असमानता:** शहरी क्षेत्रों में औद्योगिकीकरण और व्यापार के अधिक अवसर उपलब्ध होते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी और कम अवसर होते हैं। इससे शहरी-ग्रामीण आय असमानता बढ़ जाती है।

○ **क्षेत्रीय असमानता:** भारत के विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों में विकास की गति और अवसरों में अंतर होता है। कुछ राज्य आर्थिक रूप से संपन्न होते हैं, जबकि अन्य गरीब रहते हैं।

### ○ धन और संपत्ति का संकेंद्रण:

○ **संपत्ति संकेंद्रण:** धन और संपत्ति की संकेंद्रण की स्थिति में कुछ व्यक्तियों या कंपनियों के हाथ में बड़ी मात्रा में संसाधन होते हैं, जबकि अधिकांश लोगों के पास न्यूनतम संसाधन होते हैं। इससे आर्थिक असमानता बढ़ती है।



○ सामाजिक और जातिगत भेदभाव:

○ जातिगत असमानता: जाति और सामाजिक स्थिति के आधार पर लोगों को आर्थिक अवसरों में भेदभाव का सामना करना पड़ता है। अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लोग अक्सर आर्थिक रूप से पिछड़े रहते हैं।

**लिंग भेदभाव:** महिलाओं और अन्य लिंग भेदभावित समूहों को भी समान अवसर नहीं मिलते, जिससे आय असमानता में वृद्धि होती है।

**आय असमानता के प्रभाव**

1. सामाजिक असंतोष और तनाव:

○ आय असमानता के कारण समाज में गहरा असंतोष उत्पन्न होता है, जो सामाजिक तनाव और संघर्षों को जन्म देता है। इससे समाज में विभाजन और असामाजिक गतिविधियाँ बढ़ सकती हैं।

○ स्वास्थ्य और शिक्षा में असमानता:

○ गरीब वर्ग के लोगों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं और शिक्षा प्राप्त नहीं होती, जिससे उनके जीवन स्तर में गिरावट आती है और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

○ आर्थिक विकास में रुकावट:

○ आय असमानता के कारण व्यापक जनसंख्या की खरीददारी की शक्ति कम हो जाती है, जो समग्र आर्थिक विकास की गति को धीमा कर देती है। निवेश और खपत की कमी से आर्थिक विकास प्रभावित होता है।

○ अपराध और हिंसा:

आर्थिक असमानता और गरीबी की स्थिति में अपराध और हिंसा की घटनाओं में वृद्धि होती है। असंतोष और उपेक्षा के कारण लोग अपराधिक गतिविधियों की ओर प्रवृत्त हो सकते हैं।

**आय असमानता के खिलाफ उपाय**

1. शिक्षा और कौशल विकास में निवेश:

○ शिक्षा प्रणाली में सुधार और व्यावसायिक कौशल विकास के लिए कार्यक्रमों को बढ़ावा देना आवश्यक है। सभी वर्गों के लोगों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और प्रशिक्षण उपलब्ध कराना चाहिए।

○ सामाजिक सुरक्षा और कल्याण योजनाएं:

○ गरीब और कमजोर वर्गों के लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाएं और कल्याणकारी योजनाओं का विस्तार किया जाना चाहिए। इससे उनके जीवन स्तर में सुधार होगा और आय असमानता कम होगी।

○ आर्थिक अवसरों का समान वितरण:

○ ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए विशेष योजनाएं बनाई जानी चाहिए। इसके साथ ही, छोटे और मध्यम उद्यमों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

○ कर प्रणाली में सुधार:

○ न्यायसंगत और प्रभावी कर प्रणाली का निर्माण किया जाना चाहिए, जिसमें उच्च आय वाले वर्गों से अधिक कर वसूला जाए और इसका उपयोग गरीब वर्ग के उत्थान के लिए किया जाए।

○ जातिगत और लिंग भेदभाव का उन्मूलन:

जाति और लिंग के आधार पर भेदभाव को समाप्त करने के लिए संवैधानिक और सामाजिक उपाय किए जाने चाहिए। सभी वर्गों को समान अवसर और अधिकार मिलने चाहिए।



## निष्कर्ष

आय असमानता भारत में एक जटिल और गहरी समस्या है, जो सामाजिक और आर्थिक संरचना को प्रभावित करती है। इस समस्या का समाधान केवल सरकार या किसी एक संस्था के बल पर नहीं किया जा सकता। इसके लिए व्यापक और समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है, जिसमें शिक्षा, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा, और नीति सुधार शामिल हैं। एक समावेशी और समान समाज की दिशा में काम करते हुए ही हम आय असमानता को कम कर सकते हैं और एक स्वस्थ और स्थिर सामाजिक व्यवस्था का निर्माण कर सकते हैं।



हिन्दी भाषा नहीं, भावों  
की अभिव्यक्ति है। यह  
मातृभूमि पर, मर मिटने  
की भक्ति है।



भारत माता के माथे की बिंदी  
हमारी राजभाषा हिन्दी।





# खेल का खेला हो गया

पेरिस ओलंपिक 2024 (कुश्ती खिलाड़ी विनेश फोगाट को समर्पित)

श्री प्रसाद भेलके

क्लर्क

कुश्ती के खेल में, कुश्ती रह गयी बाजू  
आयोजक से ले बैठ गए, हाथ में तराजू

कलतक जो पचास था,  
वो आज सौ ग्राम ज्यादा है  
काँटा टस से मस न होने देंगे ,  
यह फेडरेशन का वादा है

खेल, खेलकर हारना जीतना,  
कुछ तो समझ में आता है  
पर पचास के वजन में जीता सिल्वर,  
क्यूं छीना जाता है ?

मेहनत, लगन, वो कुश्तियों का  
कुछ भी मायने नहीं रखता है  
सौ, डेढ़ सौ ग्राम का बढ़ा वजन  
आपके सारे पदक छीन ले जाता है  
जब खेल, खेल से ज्यादा नियमों में बाँधा जाता है  
तब ऐसी स्थितियों में यही नतीजा आता है



नव विहान 2024



# योग और स्वस्थ जीवन

श्री महेंद्र मालू  
लेखापरीक्षक



योग कला और विज्ञान की तरह है जो हमें स्वस्थ जीवन जीने में मदद करता है। यह एक प्रकार की आध्यात्मिक प्रथा है जो हमारे दिमाग और शरीर को एक साथ संतुलित तरीके से काम करने पर केंद्रित करती है। यह सिर्फ व्यायाम नहीं है, बल्कि यह हमारे पूरे जीवन को अनुशासन में रखता है।

योग बीमारियों से बचाव और हमें स्वस्थ रखने के लिए भी अच्छा और आसान विकल्प है। यह उन समस्याओं को हल करने में मदद करता है जो हमारे जीने के तरीके से आती हैं। यह दर्शाता है कि योग शारीरिक आसन नहीं है, यह हमारे दिमाग और शरीर को तालमेल में रखने का एक तरीका है।

## योग का अर्थ

“योग” शब्द का अर्थ है “जोड़ना”। केवल शारीरिक व्यायाम करने से परे, योग व्यक्तिगत चेतना को अनंत आत्मा से जोड़ने का कार्य करता है। यह दो चीजों को एक साथ लाने जैसा है। योग में अभ्यास और प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से मन की प्रकृति की खोज करना भी शामिल है। यह एक प्राचीन कला है जिसका उद्देश्य शरीर, मन और आत्मा में सामंजस्य स्थापित करना और उनका विकास करना है।

योग यह देखने का एक तरीका है कि हमारा दिमाग कैसे काम करता है। इसमें योग साहित्य में वर्णित विभिन्न अभ्यास और तकनीकें शामिल हैं, और इन सभी चीजों को एक साथ ‘योग’ कहा जाता है। सरल शब्दों में, योग खुद को किसी बड़ी चीज़ से जोड़ने, अपने दिमाग को बेहतर ढंग से समझने और हमारे समग्र कल्याण को विकसित करने के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग करने में सहायता करता है।

## योग का महत्व

योग बच्चों के लिए एक अच्छे मित्र की तरह है, जो उनके शरीर, दिमाग और भावनाओं के लिए एक स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देता है। यह शारीरिक शक्ति, सहनशक्ति और ऊर्जा का निर्माण करने में मदद करता है, साथ ही बढ़ती एकाग्रता, शांति और संतुष्टि जैसे मानसिक लाभ भी लाता है। इससे अंदर और बाहर संतुलन बनता है। योग रोजमर्रा की जिंदगी के तनाव से निपटने का एक साधन बन गया है।

योग को शरीर के लिए एक स्थिरता प्रदान करने वाले और कभी-कभी व्यस्त मन के लिए एक शांत प्रभाव के रूप में भी कार्य करता है। यह जोड़ों और अंगों जैसी अंदरूनी चीजों की भी देखभाल करता है, हर चीज़ को अच्छी तरह से रखता है। चिकित्सा अध्ययन कहते हैं कि सभी शारीरिक गतिविधियों में से, योग सबसे अलग है क्योंकि यह पूरे शरीर को अच्छी कसरत देता है, जिससे बीमार होने की संभावना कम हो जाती है। नियमित रूप से योग का अभ्यास करने से किसी के भी जीवन पर सकारात्मक, स्थायी प्रभाव पड़ सकता है।

## योग के लाभ

योग समग्र स्वास्थ्य के लिए एक जादुई औषधि की तरह है, जो शरीर की मुद्राओं (आसन) और सांस पर ध्यान केंद्रित करता है।

ध्यान और साँस लेने के व्यायाम (प्राणायाम) का अभ्यास करके, आप अपने जीवन से तनाव को दूर कर सकते हैं और एक स्वस्थ जीवन शैली का आनंद ले सकते हैं। यह उन पुरानी बीमारियों के लिए एक शानदार उपाय है जिनसे नियमित दवाओं से निपटना कठिन होता है।

यदि आप पीठ दर्द या गठिया से जूझ रहे हैं, तो प्रमुख मांसपेशियों को लक्षित करने वाले विशिष्ट आसन अविश्वसनीय रूप से सहायक हो सकते हैं। फेफड़ों की क्षमता के लिए, प्राणायाम से बढ़कर कुछ नहीं, जो सर्वोत्तम साँस लेने का व्यायाम है।

सांस के साथ जुड़े आसन का क्रम न केवल आपके शरीर के हर हिस्से को लाभ पहुंचाता है बल्कि ताकत, फुर्तीलेपन और संतुलन को भी बढ़ाता है।

दैनिक योग मांसपेशियों को मजबूत बनाता है, फुर्तीलापन बढ़ाता है और जोड़ों की समस्याओं से बचाता है।

यह ऊर्जा बढ़ाने, आरामदायक नींद को बढ़ावा देने और रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रण में रखने के लिए वन-स्टॉप समाधान की तरह है।

योग की असली सुंदरता शारीरिक और मानसिक दोनों तरह के कल्याण पर इसके दीर्घकालिक प्रभाव में निहित है। विभिन्न फिटनेस स्तरों के अनुरूप चुनने के लिए आसनों की एक विस्तृत विविधता मौजूद है।

योग में दवाओं की कोई ज़रूरत नहीं – योग बिना किसी हानिकारक दुष्प्रभाव के प्राकृतिक उपचारक की तरह काम करता है। बस अपने शरीर के लिए सही आसन चुनें, उनका सही ढंग से अभ्यास करें और शांतिपूर्ण मन और स्वस्थ शरीर के असीम लाभों का आनंद लें।

## उपसंहार

योग स्वास्थ्य को बढ़ावा देने का एक सुरक्षित और अद्भुत तरीका है, और सबसे अच्छी बात यह है कि इसे कोई भी कर सकता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपकी उम्र कितनी है या आपका आकार कैसा है। योग शारीरिक समन्वय को बेहतर बनाने में मदद करता है और यह सुनिश्चित करता है कि आप सीधे खड़े हों और बैठें। यह आपके परिसंचरण, पाचन और तंत्रिका तंत्र के लिए शक्ति बढ़ाने का कार्य करता है, जिससे आप युवा और ऊर्जा से भरपूर महसूस करते हैं।

योग के बारे में अच्छी बात यह है कि यह मन और शरीर दोनों पर एक साथ कार्य करता है, जिससे यह शरीर के समग्र कल्याण का एक आदर्श उदाहरण बन जाता है। यह अब बहुत चलन में है, प्रसिद्ध लोग, नेता और नियमित लोग सभी इसमें शामिल हो रहे हैं। यह आपके दिमाग को साफ करता है, आपके शरीर को स्वस्थ रखता है, और आपकी भावनाओं और विचारों को नियंत्रित करने में आपकी मदद करता है। यह खुद को बदलने और फिट रहने का एक लोकप्रिय और आसान तरीका है जिसे नियमित रूप से किया जाए तो यह आपको जीवनभर स्वस्थ रखने का कार्य कर सकता है।



# हिंदी भारत की राजभाषा

श्री मो. फैज़

लेखापरिक्षक



भाषा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम अपनी बातों को एक-दूसरे को समझा पाते हैं। भारत विविधताओं का देश है यहाँ पर विभिन्न प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं। People's Linguistic Survey of India (PLSI) के अनुसार वर्तमान में भारत में कुल 780 भाषाएँ बोली जाती हैं। जिनमें से हिंदी भाषा का प्रतिशत बहुत ही अधिक है। भारतीय जनगणना 2011 के अनुसार करीब 44 % लोग हिंदी बोलते हैं। हिंदी हमारी राजभाषा है, हिंदी को राजभाषा के रूप में अपनाने का कारण अनेक भाषाओं वाले राष्ट्र में संचार व प्रशासन को सरल बनाना है जिसे सभी लोग आसानी से समझ सकें। महात्मा गाँधी ने 1917 में गुजरात शैक्षिक सम्मेलन में अपने भाषण में राष्ट्रभाषा की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा था कि भारतीय भाषाओं में केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया जा सकता है क्योंकि यह अधिकांश भारतीयों द्वारा बोली जाती है। यह समस्त भारत में आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक सम्पर्क माध्यम के रूप में प्रयोग के लिए सक्षम है तथा इसे सारे देश के लिए सीखना आवश्यक है।

भारतीय संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया इसलिए प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं। राजभाषा का अर्थ होता है, वह भाषा जो देश द्वारा घोषित भाषा है जिसका उपयोग सरकारी कामकाज में कर्मचारियों द्वारा किया जाता है। संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार 1965 तक हिंदी को एकमात्र राजभाषा बनाया जाना तय हुआ था। ठीक इसके पहले अहिन्दी भारतीय राज्यों ने इसका तीव्र विरोध शुरू कर दिया। इस विरोध को सुलझाने के लिए 1963 में राजभाषा अधिनियम 1963 पारित किया गया। इसमें यह प्रावधान किया गया कि जब तक अहिन्दी भारतीय राज्य अंग्रेजी को समाप्त करने का संकल्प नहीं लेंगे, तब तक द्वितीय राजभाषा के रूप में अंग्रेजी का प्रयोग होता रहेगा, इस अधिनियम के बाद राजभाषा संकल्प 1968 पारित किया गया जिसका उद्देश्य हिंदी भाषा को प्रोत्साहन देना तथा इसका तीव्र विकास करना था। राजभाषा अधिनियम को सुचारु रूप से चलाने के लिए राजभाषा नियम 1976 बनाये गए जो राजभाषा हिंदी को सरकारी कामकाज में उपयोग को सुनिश्चित करते हैं। संविधान के भाग 17 के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा हिंदी के बारे में स्पष्ट किया गया है जिसमें हिंदी को प्रथम राजभाषा और लिपी देवनागरी को स्वीकार किया गया है तथा आठवीं अनुसूची भी जोड़ी गयी है जिसमें प्रारंभ में हिंदी सहित 14 भारतीय भाषा जोड़ी गयी। आज इनकी संख्या 22 है जो की निम्नलिखित हैं:- हिंदी, असमिया, बांग्ला, गुजराती, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओडिया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलुगू, उर्दू, बोडो, संथाली, मैथिली और डोगरी।

अनुच्छेद 343 में कहा गया है की संघ कि राजभाषा हिंदी और लिपी देवनागरी होगी। अनुच्छेद 351 हिंदी भाषा को विकसित करने के लिये इसके प्रसार का प्रावधान करता है ताकि यह भारत की मिश्रित संस्कृति के सभी तत्वों के लिये अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में कार्य कर सके। इस प्रकार संवैधानिक दृष्टिकोण से हमारा कर्तव्य है कि हम अपने कार्यक्षेत्र में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें।





# कड़ी मेहनत बनाम स्मार्ट वर्क के बारे में एक कहानी

श्री एस.टी. मौन्देकर  
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एक बार की बात है, एक गरीब मजदूर था, वह हर दिन कड़ी मेहनत करता था, पहाड़ों में पत्थर तोड़ता था और उन्हें बाजार में बेचता था। एक बेहद कठिन काम जिसमें उसे सुबह से लेकर रात तक का समय लगता था, लेकिन यह उसके परिवार का भरण-पोषण करने के लिए पर्याप्त नहीं था।

एक दिन, जब वह पत्थर बेचने के लिए एक कारीगर की दूकान पर गया, तो उसने देखा कि कारीगर एक व्यापारी को हजारों रुपये में कीमती पत्थर बेचता है। मजदूर ने कारीगर से पूछा तुम्हें ये खूबसूरत पत्थर कहाँ से मिलते हैं ?

शिल्पकार ने उत्तर दिया, ये पत्थर हैं जो तुमने कल मुझे बेचे थे, मैंने छोटे-छोटे टुकड़े बनाकर उन्हें सुन्दर मूर्तियों में बदल दिया।

मजदूर बेहद दुखी हुआ और बोला “मेरी मेहनत का कोई मूल्य नहीं है मैंने गर्मियों में प्रतिदिन 9-10 घंटे काम किया, लेकिन मुझे केवल कुछ रुपये ही मिले और आप जो घर बैठे कुछ घंटे काम करते हैं, हजारों रुपये कमाते हैं। आप ज्यादा मेहनत नहीं कर रहे हैं लेकिन आपका मुनाफा मुझसे दस गुना ज्यादा है।

कारिगर ने उत्तर दिया “किसी भी उत्पाद का मूल्य इस बात से निर्धारित नहीं होता है कि उस पर कितनी मेहनत खर्च की गई है, उसका मूल्य इस बात पर निर्धारित होता है कि वह कितना उपयोगी है”।

निष्कर्ष :-

यदि आपको ऐसा लगता है कि आप कड़ी मेहनत कर रहे हैं और जो आप चाहते हैं वह नहीं मिल रहा है, तो इसका मतलब है की आप पर्याप्त समझदारी से काम नहीं कर रहे हैं। इस लेख का उद्देश्य कड़ी मेहनत के महत्व को कम करना नहीं है, यह मानते हुए कि सफलता के लिए कड़ी मेहनत आवश्यक है।

अपनी नौकरी पर कड़ी मेहनत करो, और तुम जीविकोपार्जन कर सकते हो। अपने आप पर कड़ी मेहनत करें, और आप भाग्य बना सकते हैं।

खुद पर काम करने का मतलब है अपने कौशल में सुधार करना, आपके पास जितना अधिक कौशल होगा, आप कम प्रयास में उतना अधिक कमायेंगे, उस कौशल को पाने के लिए अभी से कड़ी मेहनत करें।

तो क्या इस कहानी को पढ़ने के बाद आप खुद को होशियार मानेंगे या मेहनती? आपको अपने लघु और दीर्घकालिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कितना प्रयास करने की आवश्यकता है?



# “सत्य कभी भी एक न्यायपूर्ण कार्य को हानि नहीं पहुँचाता”

सुश्री आरुषी यादव  
लेखापरीक्षक



सन २०१९ में, चंद्रयान -2 को इस विश्वास के साथ लांच किया गया था की भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन दुनिया को अपनी क्षमता दिखा पाएगा। यह एक जटिल मिशन था जिसका उद्देश्य चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव का अन्वेषण करना था। लेकिन एक त्रुटि के कारण यह असफल हो गया और लैंडर चन्द्रमा पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हालांकि इससे उम्मीदों को गहरा धक्का लगा, लेकिन इसने आवश्यक परिवर्तनों और अधिक शोध एवं अनुसन्धान की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला।

इस सत्य को स्वीकार करने के बाद ही चंद्रयान-3 को विकसित करने का दूसरा प्रयास किया गया। चार साल बाद २०२३ में दुनिया ने अंततः चंद्रयान-3 की चन्द्रमा पर सफल लैंडिंग के ऐतिहासिक क्षण को देखा गया, जिससे भारत चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव के निकट सफलतापूर्वक लैंडिंग करने वाला पहला देश बन गया।

इसलिए, सत्य चाहे कितना भी कठोर क्यों न लगे, यह कभी भी एक न्यायपूर्ण कार्य को क्षति नहीं पहुँचाता है।

इस निबंध में, हम देखेंगे कि कैसे सत्य अन्याय को सुधारने में सक्षम है, सत्य को स्वीकार करने का महत्व और यदि सत्य को उचित तरीके से प्रस्तुत नहीं किया गया तो यह किसी भी अच्छाई से अधिक नुकसान पहुँचा सकता है। हम यह चर्चा करेंगे कि सत्य और न्याय की धारणा दोनों ही व्याख्या के अधीन हैं।

## ‘अन्याय को सुधारने की सत्य की क्षमता’

किसी भी अन्याय को अपेक्षित सुधार के लिए सबसे पहले सत्य का ज्ञान होना आवश्यक है। समस्याएँ, उनके स्वरूप एवं संभावित परिदृश्यों को जानने के बाद ही हम संभावित समाधानों के बारे में सोच सकते हैं। लेकिन क्या केवल सत्य जानना ही काफी है? शायद नहीं सत्य को स्वीकार करने के बाद ही हम अन्याय को सुधार सकते हैं।

कई बार हम अपने सामने सत्य को स्वीकार करने से इंकार करते हैं क्यों कि इसे स्वीकारना बहुत कठिन लग सकता है। लेकिन इसके साथ ही हम अंधकार में जीते रहते हैं और विकास और परिवर्तन के अवसर को रोक देते हैं। इसलिए, स्वयं और अपने समाज में खामियों को स्वीकार करना और उनके लिए समाधान प्रदान करने पर काम करना ही सही है।

बारम्बार कई उदाहरणों ने इसे साबित किया है।

राजा राम मोहन रॉय, जिन्हें 'भारतीय पुनर्जागरण के पिता' माना जाता है, ने सती प्रथा और बाल विवाह जैसे सामाजिक बुराइयों से लड़ने में अदम्य साहस और दृढ़ संकल्प दिखाया। उस युग में अधिकांश लोग अत्याचारों को देख रहे थे अथवा सत्य से अवगत थे लेकिन इसके बारे में उनके द्वारा कुछ नहीं किया गया। राजा राम मोहन रॉय जैसे सामाजिक सुधारकों द्वारा सत्य को स्वीकार करने और न्याय के लिए काम करने के बाद ही १८२९ में तत्कालीन गवर्नर जनरल ऑफ़ इंडिया, लार्ड विलियम बेंटिंग द्वारा सती प्रथा के उन्मूलन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

एक अन्य उदाहरण आजादी के बाद के युग में स्थापित किया गया है जब भारत खाद्य असुरक्षा का सामना कर रहा था। लेकिन पिछले व्यक्तिगत वीरतापूर्ण कार्यवाही के उदाहरण के विपरीत, इसमें भारतीय जनसँख्या का एक बड़ा वर्ग शामिल है।

१९६० के मध्य में, जब भारत ने चीन के साथ युद्ध लड़ा था, गंभीर अकालों का सामना किया था, तो यह स्पष्ट था कि देश अपनी बढ़ती हुई जनसँख्या की खाद्य मांगों को पूरा करने में संघर्ष कर रहा है। तब भारत के माननीय प्रधानमंत्री, श्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने सत्य को स्वीकार किया और स्थिति का विश्लेषण किया। उनके तत्कालीन प्रयासों जैसे 'सप्ताह में कम से कम एक समय के भोजन का त्याग' करने की जनता से अपील और हरित क्रांति, की वजह से भारत आज खाद्य असुरक्षा से ऊपर है और कई कृषि उत्पादों का अधिशेष उत्पादक भी है।

\* सत्य की यह स्वीकृति खेलों की एक घटना में भी सही साबित हुई। भारत में क्रिकेट लगातार बढ़ते प्रशंसक वर्ग के साथ, भारतीय क्रिकेट टीम ने २०१९ के एकदिवसीय विश्व कप जीतने के लिए कड़ी मेहनत की। लेकिन सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड के खिलाफ एक दिल दहला देने वाली हार का सामना करना पड़ा। तभी यह महसूस हुआ की हमें अच्छे गेंदबाजों और टीम में भूमिकाओं के उचित आवंटन की आवश्यकता है।

भारतीय क्रिकेट टीम २०२३ के एकदिवसीय विश्व कप में मजबूत होकर आई। लगातार जीत ने न केवल यह दिखाया कि उन्होंने कड़ी मेहनत की है बल्कि प्रत्येक खिलाड़ी की अपनी भूमिका होने के साथ उन सभी ने मैदान में सराहनीय खेल भी खेला।

लेकिन एक सवाल उठता है कि ऐसे कई उदाहरणों के बाद भी क्या सत्य हमेशा 'कोई नुकसान' नहीं पहुँचाता है ?





## ‘अनैतिक दुनिया’

सत्य एक पूरी तरह से नैतिक दुनिया में एक न्याय पूर्ण कारण को ‘कभी’ नुकसान नहीं पहुँचाता है। लेकिन इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है की हम अनैतिक इंसानों से भरी हुई दुनिया में रहते हैं। कोई भी जो किसी साथी इन्सान से नैतिक व्यवहार की उम्मीद कर रहा है वह खुद को बेवकूफ बनाने के अलावा कुछ नहीं कर रहा है।

ऐसे कई उदाहरणों से समझा जा सकता है।

हम देखते हैं कि प्रशासन में वरिष्ठ अधिकारियों को उनके कर्तव्यों के सच्चे आचरण के लिए बार-बार स्थानांतरित किया जाता है। इसी तरह के हालत उन मुखबिरों के होते हैं जो सत्य का मार्ग अपनाते हैं।

तो क्या हमें सत्य के मार्ग का पालन करना बंद कर देना चाहिए ? इसका उत्तर है, ‘नहीं’। रास्ता आसान नहीं है, न ही शीघ्रगामी है। यह वास्तव में एक कठिन और समय लेने वाली प्रक्रिया है लेकिन अंततः, यही न्याय है।

सत्य का ज्ञान उचित तरीके से प्रस्तुत किया जाना चाहिए अन्यथा यह किसी भी अच्छाई की तुलना में अधिक नुकसान पहुंचा सकता है।

उदाहरण के लिए, शिक्षक और छात्र के बीच के सम्बन्ध के बारे में सोचा जा सकता है शिक्षक की ओर से छात्र को उसकी कमियों के बारे में बताने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए। अगर इसे बेरुखी या कठोरता से बताया जाय तो छात्र हतोत्साहित हो सकता है और शायद कभी उभर भी न पाए। लेकिन अगर शिक्षक छात्र को उसके दोषों को उचित तरीके से समझाता है, तो वह अपेक्षा से भी बेहतर कर सकता है।

लेकिन सत्य और न्याय क्या है ? यह निश्चित रूप से विभिन्न मनुष्यों की व्याख्या के अधीन है।

## ‘सत्य का परिप्रेक्ष्य’

सत्य सभी के लिए सामान नहीं होता है। यह विभिन्न स्थितियों पर निर्भर करता है और इसे ‘हाथी और अंधे आदमियों’ की एक बहुत प्रसिद्ध कहानी से समझा जा सकता है। जब हाथी को विभिन्न भागों से अंधे लोग छूते हैं तो वह सत्य की अपनी-अपनी समझ बताते हैं जो की अलग अलग हो सकती हैं। किसी को भी पूरी तरह सच नहीं कहा जा सकता लेकिन किसी को भी पूरी तरह झूठा भी नहीं कहा जा सकता।

## ‘न्याय का परिप्रेक्ष्य’

जिस तरह कुछ स्थितियों में अलग-अलग लोगों के लिए सत्य अलग-अलग होता है, उसी तरह ‘न्याय’ की धारणा भी भिन्न हो सकती है। इसे डॉक्टर की नैतिक दुविधा जिसमें एक मरता हुआ रोगी अपना बेटा खो देता है से समझा जा सकता है।

कुछ लोग कह सकते हैं कि मरने वाले व्यक्ति को यह जानने का अधिकार है कि उसके बेटे की मृत्यु हो गयी है लेकिन साथ ही दूसरे सोच सकते हैं कि मरते हुए रोगी को यह सोचकर शांति से मरने देना उचित है कि उसका परिवार सुरक्षित और स्वस्थ है। इसलिए, यह व्याख्या के अधीन है।

सत्य हमारी सोच से कहीं अधिक जटिल है। यह केवल ज्ञान ही नहीं है अपितु इसके साथ स्वीकृति, उचित प्रसार और व्याख्या की जिम्मेदारी भी आती है। सत्य सूर्य के प्रकाश की तरह है जो उचित समय पर प्रकाशित हो ही जाता है। इसे परेशान किया जा सकता पर पराजित नहीं।



# पश्चिमी घाटों में मानसून : एक विस्तृत विश्लेषण

सुश्री नमता  
स्टेनो



## परिचय.

भारत के पश्चिमी तट पर स्थित पर्वत शृंखला को पश्चिमी घाट या सहयाद्री कहते हैं। दक्कन पठार के पश्चिमी किनारे के साथ-साथ यह पर्वतीय शृंखला उत्तर से दक्षिण की तरफ १६०० किलोमीटर लम्बी है। विश्व में जैविकीय विविधता की दृष्टि से विश्व में इसका ८वां स्थान है। यह पर्वत एक ऐतिहासिक और भूगर्भीय दृष्टि से महत्वपूर्ण पर्वत शृंखला है। यह पर्वत शृंखला न केवल भारत की भू-आकृति को आकर देती है, बल्कि इसके मौसमीय पैटर्न और परिस्थितिकी तंत्र पर भी गहरा प्रभाव डालती है। इस लेख में हम पश्चिमी घाटों में मानसून के आगमन, प्रभाव, परिस्थितिकी तंत्र, आर्थिक महत्व और पर्यावरणीय चुनौतियों पर विस्तृत वर्णन करेंगे।

## मानसून का आगमन.

भारत में मानसून की शुरुआत हर साल जून के आसपास होती है, जब दक्षिण-पश्चिमी मानसून भारतीय उपमहाद्वीप पर पहुँचाता है। पश्चिमी घाटों की शृंखला दक्षिण-पश्चिमी मानसून की पहली बारिश को रोकने और संतुलित रूप से वितरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस क्षेत्र की ऊँचाई और ढलान की दिशा मानसून की बारिश को अत्यधिक प्रभावित करती है। जब मानसून की हवाएँ पश्चिमी घाटों से टकराती हैं, तो यहाँ भारी वर्षा होती है, जो इस क्षेत्र की जलवायु को पूरी तरह से बदल देती है।

## मानसून की वर्षा का पैटर्न.

पश्चिमी घाटों में मानसून के दौरान भारी वर्षा होती है। यहाँ पर औसतन 2,000 से 5,000 मिमी तक वर्षा होती है, जो भारत के अन्य हिस्सों की तुलना में काफी अधिक है। इस भारी वर्षा का असर इस क्षेत्र की जलवायु, वनस्पति और भूगर्भीय संरचना पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यहाँ की जलवायु विविधतापूर्ण होती है। कुछ क्षेत्रों में उपोष्ण-कटिबंधीय जलवायु होती है, जबकि अन्य क्षेत्रों में समशीतोष्ण जलवायु देखी जाती है। जिस विविधता के कारण, पश्चिमी घाटों में प्राकृतिक संसाधनों की एक समृद्ध विविधता पाई जाती है।

## परिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता.

पश्चिमी घाटों की भारी वर्षा इस क्षेत्र के परिस्थितिकी तंत्र को समृद्ध बनाती है। यहाँ की वनस्पतियों में अत्यधिक जैव विविधता पायी जाती है। पश्चिमी घाटों में कई दुर्लभ और विलुप्तप्राय वनस्पतियाँ और जीव-जंतु पाए जाते हैं। जैसे की शाबरम और चिपोंडा, और अन्य स्थानीय वनस्पतियाँ यहाँ की वनस्पति का हिस्सा हैं। इसके आलावा, यहाँ पर बाघ, भारतीय हाथी, और कई प्रजातियों के पक्षी भी निवास करते हैं। इस क्षेत्र की जैव विविधता वैश्विक परिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण योगदान करती है और इसके संरक्षण की आवश्यकता है।



### आर्थिक महत्व.

पश्चिमी घाटों में मानसून का आर्थिक महत्व भी अत्यधिक है। पश्चिमी घाट लोहा, मैंगनीज और बाकसाइट अयस्कों में समृद्ध है। पश्चिम घाट के जंगल से प्राप्त होने वाली लकड़ी, एक महत्वपूर्ण स्रोत है और बड़ी संख्या में वन-आधारित उद्योगों जैसे कागज, प्लाईवुड, पाली-फाइबर और माचिस की लकड़ी आदि में इसका प्रयोग किया जाता है। इस क्षेत्र में कृषि पर निर्भरता अधिक है, और मानसून की सही स्थिति किसानों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। पश्चिमी घाटों में चाय कॉफी, मसाले और अन्य कृषि उत्पादों की खेती की जाती है। भारी वर्षा के कारण, इन फसलों की गुणवत्ता और मात्रा पर सकारात्मक असर पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप, क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को स्थिरता मिलती है, और किसानों की आय में वृद्धि होती है।

### पर्यटन और तीर्थयात्रा स्थल.

ऐसे कई पर्यटन स्थल भी पश्चिमी घाट में हैं उदाहरण ऊटी। इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल भी हैं - इनमें केरल में सबरीमला, कर्णाटक में मदेश्वर्मलाई और महाराष्ट्र में महाबलेश्वर प्रमुख हैं।

### पर्यावरण चुनौतियाँ.

हालांकि मानसून पश्चिमी घाटों के परिस्थितिकी तंत्र के लिए लाभकारी है, लेकिन इस क्षेत्र को विभिन्न पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना भी करना पड़ता है। वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन, और मानव गतिविधियों के कारण परिस्थितिकी तंत्र में असंतुलन उत्पन्न हो रहा है। वनों की कटाई से वनस्पतियों और जीवों के निवास स्थान की हानि हो रही है, और जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा का पैटर्न प्रभावित हो रहा है। इन समस्याओं को हल करने के लिए, वन संरक्षण, पर्यावरणीय शिक्षा और सतत विकास की दिशा में प्रयास आवश्यक है।

### निष्कर्ष.

पश्चिमी घाटों में मानसून की वर्षा इस क्षेत्र की प्राकृतिक सुन्दरता, जैव विविधता और परिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। हालांकि, पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करने के लिए सतत प्रयास और संरक्षण की आवश्यकता है। यदि इस क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों का उचित प्रबंधन किया जाए, तो पश्चिमी घाट भारतीय परिस्थितिकी तंत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहेंगे और भविष्य में भी अपनी समृद्धि बनाए रखेंगे। पश्चिमी घाटों का संरक्षण न केवल इस क्षेत्र की जैव विविधता को सुरक्षित करेगा, बल्कि पूरे देश की पर्यावरणीय संतुलन में भी योगदान देगा।



# मुंबई की लोकल ट्रेन

श्री मुकेश रजक  
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



शहर से होकर गुजरने वाला इंजनों का यह घूमता हुआ जाल मुंबई की जीवन रेखा है और शायद इसकी पहचान का सबसे बड़ा हिस्सा है। चूंकि मुंबई की लोकल ट्रेनें एक सामान्य मुम्बईकर के जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा हैं और हर दिन दस लाख से अधिक लोग इसमें यात्रा करते हैं, इससे जुड़ी लाखों कहानियां हैं। जो लोग इन ट्रेनों में यात्रा करते हैं उन्हें यात्रा करने में काफी संघर्ष करना पड़ता है फिर भी उनके मन में इसके प्रति एक अजीब सा लगाव बना रहता है। हम आपके लिए मुंबई लोकल ट्रेनों की कुछ बेहतरीन कहानियां लेकर आए हैं जो शहर के परिवहन के सबसे पसंदीदा साधनों के प्रेम साधनों के प्रेम सम्बन्ध को सामने लाती हैं।



## 1. जो गलती से ट्रेन में चढ़ गया

हमारी पहली कहानी मुंबई के एक छात्र, सुरेश बिश्वास द्वारा साझा की गयी है, जो एक ऐसे व्यक्ति के बारे में एक मजेदार घटना बताता है जो माटुंगा के लिए लोकल में चढ़ा था, लेकिन गलती से गलत लोकल ले ली जो माटुंगा स्टेशन पर नहीं रुकी। अपनी गलती का एहसास होने पर वह आदमी बहुत चिंतित हो गया। उस आदमी को चिंतित होते देख, एक सहानुभूति सह-यात्री ने उसकी मदद करने की कोशिश की। इस सह-यात्री ने छह साल तक एक ही ट्रेन में यात्रा की थी और वह जानता था कि माटुंगा स्टेशन से ठीक पहले ट्रेन काफी धीमी हो जाती थी ताकि किसी को उतरने की अनुमति मिल सके।

उसने उस आदमी से कहा कि वह ट्रेन से उतर जाए और दौड़ता रहे, नहीं तो वह गिरकर घायल हो सकता है। जब कार्रवाई का क्षण आया तो सह-यात्री के कहने पर, ट्रेन धीमी होते ही वह आदमी पूरी गति से दौड़ता हुआ नीचे उतर गया। वह इतनी तेज गति से दौड़ रहा था कि वह लगभग ट्रेन से आगे निकल गया और आगे की बोगियों में बैठे यात्रियों ने सोचा कि वह ट्रेन में चढ़ना चाहता है और इसलिए उसे फिर से चढ़ने में मदद की, ताकि वह व्यक्ति उन्हें यह बता सके कि उन्होंने जो कुछ किया था, वह पूर्ववत् कर दिया है इतनी कठिनाई से।

2. वह स्थान जहाँ ट्रेन बूढ़ी औरत के लिए रुकी थी।

हमारी दूसरी कहानी उस मानवता का प्रतिनिधित्व करती है जो आज भी हमारे अद्भुत देश के महानगरों में दिखाई देती है। कहानी एक बुजुर्ग महिला की है जो आखिरी लेडीज स्पेशल ट्रेन पकड़ने के लिए जितनी तेजी से दौड़ सकती थी उतनी तेजी से दौड़ रही थी लेकिन ट्रेन को प्लेटफार्म से छूटते देख उसने हार मान ली।

इन लोकल ट्रेनों में आम तौर पर दो ड्राइवर पीछे और एक आगे होता है, किस्मत से ड्राइवर ने इस बुजुर्ग महिला को देखा और आपातकालीन ब्रेक लगाया और महिला को चढ़ाने के लिए चिल्लाया। महिला अपनी किस्मत पर आश्चर्यचकित होकर दौड़कर ट्रेन में चढ़ गयी। इस तरह की कहानियाँ एक बड़े शहर में भी एक दूसरे की मदद करने की इंसान की सहज प्रकृति में विश्वास को बहाल करती हैं, जहाँ लोगों के पास दूसरों की तो बात ही छोड़िए, खुद की देखभाल करने के लिए भी मुश्किल होता है।

3. गोन विथ द विंड : सबसे मजेदार मुंबई लोकल ट्रेन कहानी

यह कहानी देश में आपके सामने आने वाली सबसे मजेदार सार्वजनिक परिवहन कहानियों में से एक होने जा रही है। हुआ यूँ कि एक दिन हमारे मित्र निंकुज भाटिया (कहानी साझा करने वाले) चर्चगेट स्थित अपने कॉलेज से वापस आ रहे थे और लोकल पर दरवाजे के ठीक बगल में सवार होकर आ रहे थे। निंकुज के ठीक बगल में पूर्ण औपचारिक पोशाक में एक लड़का कंधे पर लैपटॉप बैग लटकाए और कान में ब्लूटूथ हेडसेट लटकाए खड़ा था।

यह आदमी किसी से बात कर रहा था लेकिन खराब सिग्नल के कारण वह केवल इतना ही कह सका, “हैलो!” नमस्ते!” सबसे ऊपर उसकी आवाज अचानक, विपरीत दिशा से एक ट्रेन आई और अपने साथ हवा का तेज झोंका लेकर आई, जिससे उस व्यक्ति का ब्लूटूथ हेडसेट उड़ गया। वह आदमी इस सब से पूरी तरह बेखबर फ़ोन पर चिल्लाता रहा, तभी करीब पांच मिनट बाद पास खड़े एक यात्री ने उसके कंधे पर थपथपाया और कहा, “बॉस! उड़ गया!”





# हिंदी पखवाडा समापन समारोह : २०२३





# नव विहान



2024